राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय।

जिज्ञासा नम्बर १

जिसको

मुतलाशियों के लिये

बाबू ब्रजवासी लाल साहब, बी. ए., एलएल. बी.,
वकील, हाई कोर्ट, ने
दयालबाग, आगरा, से प्रकाशित किया।

राधास्वामी सम्वत् १०६

दूसरी बार] सन् १९२४ ई० [१००० पुस्तकें

Printed by Swami Charan Dass at the Model Printing Works,
149, Dayalbagh, Agra.

सूचीपत्र जिज्ञासा नं० १

दफ़ा	विषय	पृष्ठ
१	जिज्ञासा की रीति-जिज्ञासू के लिये ज़रूरी सवालात	१
२-४	हिदायत पहली—निन्दा वाद विवाद जल्दी व हठ से परहेज़	३
५-६	ग़लत समझौती पहली व जवाब—अपनी समझ बूझ का एतबार नहीं	५
१०	हिदायत दूसरी—धारण करने पर मत के उसूलों से इधर उधर नहीं होना चाहिए	८
११-१३	जीवों में दरजे—परमार्थी वासना की कमी व बेशी के लिहाज़ से	१०
१४-१५	हिदायत तीसरी—कोशिश अगले दर्जे ही में बरतने की करनी चाहिए	१४
१६-२१	ग़लत समझौती दूसरी व जवाब—सच्चे परोपकार व सच्ची सेवा का वर्णन-इनके लिए अधिकार	१५
२२	हिदायत चौथी-पहले अपना उपकार करना चाहिए	२२
२३	हिदायत पाँचवीं-ऊपरी व असली इलाज में तमीज़	२४
२४-२५	ग़लत समझौती तीसरी व जवाब-सच्चे गुरू आज कल हैं ही नहीं	२६
२६-२९	ग़लत समझौती चौथी व जवाब—गुरू करना नामुनासिब है	२८
३०-३३	सच्चे गुरू की पहचान-	३४
३४-३८	ग़लत समझौती पाँचवीं व जवाब—कोई भी गुरू करलेना काफ़ी है	४४
३९	ग़लत समझौती छठी व जवाब—पिछले गुरुओं से सहायता मिल सकती है	५५

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

जिज्ञासा

जिज्ञासा की रीति।

१—किसी मज़हब की जाँच करने के लिए जिज्ञासू का अव्वल सवाल यह होना चाहिए कि इस मज़हब का मुद्दआ क्या है यानी इस मत में शरीक हो कर इसकी शिक्षा का पालन करने से मुझ को प्राप्त क्या होगा। जवाब पाने पर उसको ग़ौर करना चाहिए कि आया जो ग़रज़ या वासना परमार्थी मेरे चित्त में है उससे यह मुद्दआ मुताबिक़त रखता है या नहीं, या यह मुद्दआ मुझ को दिलपसंद है या नहीं। अगर मुद्दआ दिलपसंद है तो उसका दूसरा सवाल यह होना चाहिए कि इसकी प्राप्ति का तरीक़ा क्या है यानी इसके हासिल करने के लिए मुझ को किन चीज़ों व बातों का त्याग और किन चीज़ों व बातों का अभ्यास करना होगा। तरीक़ा मालूम होने पर उसको ख़्याल करना चाहिए कि आया इसका कोई सम्बन्ध भी उस मुद्दआ से है या नहीं। मसलन् कोई यह कहे कि

बैंगन का खाना छोड़ दो और अलस्सुबह स्नान करके एक घंटा सिर के बल खड़े रहो तो मालिक मिल जावे गा। ज़ाहिर है कि इस सूरत में नतीजे का साधन से कोई वास्ता नहीं है। समझ बूझ कर ग़ौर करने पर अगर इतमीनान हो जावे कि ज़रूर इस अमल से दिली आरज़ू पूरी हो सकती है तो जिज्ञासू का तीसरा सवाल यह होना चाहिए कि इसका बनना मौजूदा हालत में मुझ से मुमकिन है या नहीं। मसलन् किसी ग़रीब साठ बरस के बूढ़े को दरियाफ़्त करने पर कोई बतलावे कि अगर तुम नंगे पाँव फ़ुलाँ दूर दराज़ पहाड़ की चोटी पर पैदल जाओ और वहाँ पर जो मूर्ति स्थापित है उस पर सोने का छत्र चढ़ाओ तो तुम्हारी मनःकामना सिद्ध हो जावेगी। ज़ाहिर है कि वह बेचारा न तो ज़्यादा लंबा सफ़र पैदल कर सकता है और न ही सोने का छत्र चढ़ा सकता है। अगर यह सवाल भी हल हो जावे तो फिर उस को देखना चाहिए कि आया बयान करने वाला खुद भी हिदायत के बमूजिब अमल करता है या नहीं और खुद भी उसने इस मुद्दआ को किसी क़दर हासिल कर लिया है या नहीं - क्योंकि अगर वह शख़्स महज़ आलिम यानी वाचक ज्ञानी है और आमिल यानी तजरुबेकार नहीं है तो रास्ते में दिक़्क़तों के वक़्त मुनासिब सलाह व मदद न दे सकेगा और नीज़ जुक्ती यानी साधनों का इल्म

रखते हुए अगर वह अमल नहीं करता है तो मालूम हुआ कि मुद्दआ की मुख्यता उसके चित्त में नहीं है और ऐसी सूरत में उसकी सोहबत व मिसाल से तबियत में जरूर ढीलापन आजावेगा और दिली आरज़ू पूरी न हो सकेगी। चूँकि मुद्दआ मत का पसंद आगया है और साधन भी इसके मुनासिब मालूम पड़ते हैं और अपने से बन भी आवेंगे इस लिए चाहिए कि जिज्ञासू उस मत के कामिल यानी उस्ताद यानी पहुँचे हुए की तलाश करे और उनके मिल जाने पर आशा ले कर बिलातकल्लुफ़ अमल शुरू कर दे और कुछ अरसे के अभ्यास यानी शग़ल के बाद ग़ौर करे कि आया आशा पूरन होने के सामान होते जाते हैं या नहीं। अगर ऐसा हो तो मुनासिब है कि पूरे तौर पर तकिया करके जुक्ती की कमाई करता रहे और किसी के कहने सुनने की कुछ परवाह न करे और इस तौर पर एक दिन अपनी मनःकामना सिद्ध करे।

हिदायत पहली।

२—ऊपर के बयान पर ग़ौर करने से मालूम होगा कि मुतलाशी के लिए जरूरी है कि अव्वल से आख़ीर तक वह अपनी परमार्थी ग़रज़ को निगाह के सामने रक्खे और जब तक उसके पूरा होने के सामान हासिल न हो जावें धीरज व तहम्मुल के साथ खोज में लगा

रहे और सामान मिल जाने पर शौक़ के साथ अमल में मसरूफ़ हो और किसी क़दर तजरुबा हासिल होने पर गहरी उमंग और पूरी तवज्जह के साथ कोशिश करके दिली आरज़ू पूरी करे। खोज के सिलसिले में अगर किसी ओछे मत या अधूरे शिक्षक से मेल हो तो उनकी निन्दा व बाद बिबाद में पड़ कर नाहक़ अपना नुक़सान न करे बल्कि दीनता के साथ उनसे किनारा करके दूसरी जगह तलाश करे।

३—मुतलाशी के लिए यह भी लाज़िमी है कि किसी तरह की जल्दबाज़ी न करे यानी फ़ौरन् मर्ज़ी के मुताबिक़ सामान न पाकर कहीं से हट न जावे और न ही ज़रा सी बात हस्ब दिलख़्वाह पाकर झटपट लिपट जावे और आइन्दा के लिए अपनी आँखें बंद कर ले और न ही जल्द घबरा कर निरास हो बैठे। उसको चाहिए कि सच्चे ग़रज़मंद की तरह अपना नफ़ा नुक़सान अच्छी तरह परखता हुआ चाल चलता रहे और जबतक अपनी अक़्ल व तजरुबे के अनुसार और बिला किसी क़िस्म का दबाव तबियत पर डाले यह इतमीनान न हो जावे कि मंज़िले मक़सूद के लिए मुनासिब सड़क मिल गई है आराम से न बैठे।

४—खोजी को यह भी चाहिए कि किसी क़िस्म के तअस्सुब व हठधर्म को दिल में जगह न दे और न ही बिरोध और ग़ुस्से से काम ले। उसको अपना दिल सदा

खुला रखना चाहिए। जहाँ कहीं तलाश के लिए जावे वहाँ के भेद व बातचीत को ग़ौर से सुने और निरपक्ष हो कर अपने हिये की तराज़ू में तोले। अगर कोई बात समझ में न आवे तो दीनता से फिर दरियाफ़्त करे और समझ में आजाने पर उसको बेतकल्लुफ़ धारन कर ले-और अगर निरपक्ष व मुनासिब ग़ौर करने पर कोई बुनियादी उसूल या बात ओछी मालूम पड़े तो वहाँ से अलग हो जावे।

ग़लत समझौती पहली व जवाब।

५—यह जो थोड़ा सा हाल जिज्ञासा की सच्ची रीति का बयान किया गया इसपर एतराज़ किया जा सकता है कि हर शख़्स को अपनी समझ बूझ पर इस क़दर भरोसा करने के लिए हिदायत करना ठीक नहीं है क्योंकि हर किसी को इतनी अक़्ल कहाँ है कि वह मज़हबी मुआमलात को पूरे तौर पर समझ सके-और यह भी देखने में आता है कि एक शख़्स दलील से एक बात को सिद्ध करता है और दूसरा शख़्स, जो पहले से ज़्यादा होशियार है, उसकी दलील को छिन में काट डालता है। ऐसे मौक़े पर मुतलाशी, जो कि दोनों से कम समझ बूझ रखता है, हैरान हो जाता है। शुरू में पहले आदमी की शिक्षा दुरुस्त मालूम पड़ी थी उसको धारन कर लिया था अब दूसरे शख़्स ने उसको रद्द कर डाला और नई

बात बतलाई-बेचारा करे तो क्या करे-ख़्वाहमख़्वाह शुबह करता है कि कहीं तीसरा शख़्स इस नई बात को भी रद्द न कर डाले और पहले की तरह इस शख़्स की बात मान कर ख़्वाहमख़्वाह तकलीफ़ न उठानी पड़े।

६—यह एतराज़ ज़ाहिरा तो सही मालूम होता है लेकिन अगर ग़ौर से देखा जावेगा तो मालूम होगा कि बेमसरफ़ है। यह दुरुस्त है कि जिज्ञासू अक़्लेकुल या सर्वज्ञ नहीं है और इस लिए हर बात को ख़ास कर मज़हबी उसूलों को पूरे तौर पर समझने के नाक़ाबिल है मगर इसी तौर पर दूसरा शख़्स भी अक़्लेकुल नहीं है जिसके इन्तिज़ार में किसी की सुनी न जावे और जिसके कहे को बे सोचे समझे मान लिया जावे। अगर किसी वक़्त में किसी अक़्लेकुल से मुलाक़ात भी हो तो उसकी पहचान कैसे आवेगी। चूँकि मुतलाशी ख़ुद सर्वज्ञ नहीं है इस लिए अक़्लेकुल की पहचान वह या तो अपनी और उसकी समझ बूझ का मुक़ाबिला करके थोड़ी बहुत कर सकता है या फिर लोगों की देखा देखी उसको मान सकता है, मगर बमूजिब पहले एतराज़ के मुमकिन है कि कोई और शख़्स इस अक़्लेकुल को अक़्लेनाक़िस साबित कर दे व नीज़ मुमकिन है कि जिन लोगों की देखा देखी यह भाव लाना चाहता है वे ग़लती खा गये हों। इस तौर पर ज़ाहिर है कि कोई भी बात तय न हो सकेगी और जिज्ञासू की तमाम उमर "शायद" और

"मुमकिन है" ही के झगड़ों में बीत जावेगी।

७—अलावा इसके इन्सान के पास नेक व बद की तमीज़ करने के लिए बुद्धि ही तो औज़ार है और संस्कारों के बमूजिब हर शख़्स का यह औज़ार कम या ज़्यादा तेज़ होता है। हर इन्सान अपनी करनी करतूत के लिए ज़िम्मेदार गरदाना जाता है और उसके कारन दुख सुख उठाता है। अगर कोई अपनी करनी करतूत दुरुस्त रखने के लिए अपनी बुद्धि और उसके मारफ़त दूसरों की बुद्धि और अपने व दूसरों के तजरुबों से काम लेता है और नेकनियती से चलता है तो इससे बेहतर कोई कर ही क्या सकता है। अगर ऐसा करने पर भी बाद में उसको अपनी कार्रवाई ग़लत मालूम होवे तो घबराहट की कौन बात है बल्कि अच्छा हुआ कि धोका मिट गया-नया तजरुबा हासिल हो गया और नई अक़्ल आ गई-चाहिए कि वह अब इनकी रोशनी में काम करे। पिछली ज़िन्दगियों के संस्कारों के बमूजिब हाल की ज़िन्दगी में बुद्धि व दूसरे सामान मिले, इस वक़्त उनका मुनासिब इस्तेमाल करने से नये संस्कार पैदा हो गये-इसी तौर पर तरक़्क़ी करते करते ज़रूर उम्मीद की जा सकती है कि वह एक दिन ठिकाने पर पहुँच जावेगा। बरख़िलाफ़ इसके अन्धपरम्परा से दूसरों की शिक्षा पर जम जाने से अगर वे लोग ग़लती पर हैं तो यह भी उमर भर धोके

में पड़ा रहेगा और चूँकि वे लोग अपनी चाल निहारेंगे नहीं इस लिए उनको अपनी ग़लती कभी मालूम होवेगी नहीं और इस तौर पर डूबों के संग यह भी डूबा रहेगा ।

८—यह भी ख़्याल करना चाहिए कि सिर्फ़ दूसरों की देखा देखी चाल इख़्तियार कर लेने और ख़ुद दलील अक़्ली व मज़हबी इस्तेमाल न करने का नतीजा यह होता है कि अव्वल तो इसके दिल में सच्चा शौक़ मुद्दआ के हासिल करने का पैदा ही नहीं होता और अगर किसी वक़्त होता भी है तो कुछ दिनों के पीछे अंतर में शंकाएँ उठने से चाल बिलकुल ढीली पड़ जाती है और यह नाम के लिए परमार्थी रह जाता है जैसा कि हज़ारों हिन्दू, मुसलमान व ईसाई साहिबान का हाल देखने में आता है कि कहने को तो पैरोकार अपने अपने मत के हैं मगर ज़रा भी परवाह मत के उसूलों और शिक्षा की नहीं करते और सरासर लामज़हबाना ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं।

९—इन सब बातों के अलावा अगर कोई शख़्स अपनी अक़्ल व तजरुबे को इस्तेमाल करता हुआ और दूसरों की अक़्ल व तजरुबे का नफ़ा उठाता हुआ अपनी तरफ़ से सँभल सँभल कर चाल चलता है और दिली आरज़ू उसकी मालिक से मिलना है तो अगर कोई जीता जागता मालिक है वह ऐसे शख़्स की मदद व रहनुमाई न करेगा तो किसकी करेगा। यह माना कि

अभी इसको ठीक रास्ता नहीं मिला है, यह माना कि इसकी तुच्छ बुद्धि सत्य वस्तु का अनुमान करने के नाक़ाबिल है मगर चूँकि नियत इसकी साफ़ है और मुतलाशी होकर यह उसी मालिक को टटोल रहा है और पक्का इरादा रखता है कि जब तक असली सड़क न मिल जावेगी आराम न लूँगा, ऐसी हालत में ज़रूर प्रतीति हो सकती है कि वह जीता जागता मालिक अवश्य मुनासिब संजोग इसके लिए जोड़ देगा।

हिदायत दूसरी।

१०—यहाँ पर एक और बात का जतला देना ज़रूरी है यानी यह कि जिज्ञासू को चाहिए कि जब किसी मत को आज़मायश के लिए या आख़िरी तौर पर इख़्तियार कर ले तो जहाँतक मुमकिन हो निहायत तवज्जह इस बात पर दे कि किसी के बहकाने में आकर रास्ते से इधर उधर न हो जावे और बुनियादी उसूलों व शिक्षा को बिसार न दे। इस हिदायत पर अमल न करने से जो नुक़्सान हो सकता है वह ज़ाहिर है यानी मंज़िले मक़सूद की तरफ़ उसका चलना बंद हो जावेगा और बहुत मुमकिन है कि अपनी इस ग़लती की वजह से कुछ अरसे बाद यह उस मत को ग़लत जानकर छोड़ बैठे और बाद में बेमतलब इधर उधर जहान की ख़ाक छानता फिरे।

जीवों में दरजे।

११-देखने में आता है कि सब के मन की हालत यकसाँ नहीं है। हर किसी के अन्तर में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चाहें यानी बासनाएँ काम कर रही हैं - और हर शख़्स के अन्तर में कोई न कोई ख़ास चाह गहरी और तेज़ ऐसी मौजूद है कि जिससे उस शख़्स के निज ख़्वास या स्वभाव का पता चलता है - दूसरी बासनाएँ उस चाह से फीकी व हलकी रहती हैं और अक्सर उसी की मददगार व सहायक होती हैं। इतना और भी मालूम होता है कि किसी के मन की हालत सदा एक सी नहीं रहती। एक वक़्त में एक चाह प्रबल यानी ज़ोर पर होती है,दूसरे वक़्त में मध्यम यानी कमज़ोर और तीसरे वक़्त में मन्द यानी सूखी हुई। एक बात और भी देखी जाती है कि अगर कोई शख़्स किसी अङ्ग या चाह में तवज्जह के साथ अरसे तक बरते तो वही अङ्ग या चाह उसमें प्रधान हो जाती है और पुराना स्वभाव छूट कर नई आदत पड़ जाती है। इन तीनों बातों का परमार्थ पर जो असर पड़ता है आगे बयान किया जाता है।

१२-अव्वल चाह में भेद होने का असर देखिये- बाज़ लोग ऐसे हैं जिनके अन्तर में परमार्थ की चाह बिलकुल नहीं है और संसार के भोग बिलास, इन्तिज़ाम व बृद्धि की बासना सदा चैतन्य रहती है - सिर्फ़ किसी

मुसीबत या जरूरत के वक़्त मदद हासिल करने की ग़रज़ से थोड़ी बहुत परमार्थी कार्रवाई करते हैं। परमार्थ में ऐसे जीवों का दरजा नहसी का है। बाज़ों का यह हाल है कि परमार्थ की चाह तो रखते हैं मगर ओछी। उस चाह की वजह से अक्सर मज़हबी किताबों का मुताला और धार्मिक विषयों पर बात चीत करते हैं और जब कभी वह चाह ज़ोर पर आती है तो ख़ूब बहस मुबाहसा लिखकर या बोलकर करते हैं और उसी में तृप्त रहते हैं। इस क़िस्म के जीवों को अगर बहसी कहा जावे तो बेजा न होगा। तीसरी क़िस्म के लोगों का यह हाल है कि उनके दिल में सच्ची चाह परमार्थ की होती है मगर कमज़ोर। उस चाह की वजह से जब तब परमार्थ व परमार्थियों की क़दर करते हैं, साधु फ़क़ीरों से मिलते हैं, टेक के तौर पर थोड़ा बहुत पाठ पूजा करते हैं, दान पुराय करते हैं और इसी को काफ़ी समझते हैं और कोई खास जतन व कोशिश परमार्थ और इसकी कमाई की रीति समझने और समझकर कमाने की ग़रज़ से नहीं करते अलबत्ता दूसरे परमार्थियों का हाल पढ़ सुन कर कभी कभी इरादा करते हैं मगर रहते जहाँ के तहाँ ही हैं। ऐसे जीवों को परमार्थ में क़सदी कहा जा सकता है। चौथे वे लोग हैं जिन के भीतर परमार्थ का तेज शौक़ मौजूद है और जिन्हों-

ने खूब समझ बूझ कर और संसार का हाल देख भाल कर परमार्थी मुद्दआ या नुक़्ता अपने दिल में क़ायम किया है और अगरचे वह मुद्दआ किसी क़दर बेठिकाने रहता है मगर उसके हासिल करने व दुरुस्त करने के लिए बराबर खोज व जतन करते रहते हैं। साधु, फ़क़ीर या शिक्षक जो कोई मिले उसके सामने अपनी दिली आरज़ू दीनता के साथ पेश करके सलाह माँगते हैं और जब उनको कोई सच्चे साध सन्त या कामिल मिल जाते हैं तो उनसे पूरे तौर पर अपना इतमीनान करके और जो निशाना वे बतलावें उसको दिल में क़ायम करके उमंग के साथ शग़ल यानी जुक्ती का अभ्यास करते हैं। ऐसे जीव परमार्थ में जहदी या जिज्ञासू कहलाते हैं। इनसे बढ़के जो जीव होते हैं उनको दर्दी कहते हैं। इनके अन्तर में परमार्थ की निहायत सच्ची व गहरी व तेज़ चाह सदा जगी रहती है, दिनरात अकुलाहट व ब्याकुलता के साथ कमाई उन साधनों की करते हैं जिनसे दर्शन व दीदार प्रीतम का प्राप्त हो सके और कदूरत अन्दरूनी साफ़ होकर एक प्रीतम का रूप हृदय में बस जावे। ऐसे जीव जब तब अगले दरजे वजदी में दाख़िल होते हैं यानी वस्ल व दीदार अपने प्रीतम का पाकर मस्त व मगन होते हैं। इसके बाद सिर्फ़ एक दरजा रह जाता है वह क़याम या फ़ना की हालत

कही जा सकती है यानी परमार्थी की सुरत यानी रूह तन व मन पर फ़तह पाकर सदा प्रीतम के चरनों में लगी रहती है, दुख सुख दोनों का कुछ असर उसपर नहीं होता और कारज पूरा हो चुकता है–

कारज कीना पूर सन्तधूर हिरदय धरी।
सूर हुआ मन चूर नूर तूर घट में प्रगट॥

१३–अब ख़्याल करना चाहिए कि यह जो सात दरजे जीवों में परमार्थी चाह के कमी व बेशी के लिहाज़ से मुक़र्रर होते हैं इनमें जिज्ञासू का नम्बर बीच में आता है यानी तीन दरजे उसके ऊपर और तीन नीचे हैं और जैसा कि ऊपर इशारा किया गया चूँकि किसी जीव के मन की हालत सदा एक सी नहीं रहती इस लिए क़ुदरती बात है कि जिज्ञासू का मन कभी ऊँचे कभी नीचे दरजों में बरते और अगर वह किसी वजह से तवज्जह के साथ ज़्यादा अरंसे किसी नीचे दरजे में बरतेगा तो वही दरजा उसके ठहराव का बन जावेगा और इस तौर पर मुद्दआ एक मंजिल और परे हो जावेगा। इसी तरह अगर कोशिश इस बात की की जावेगी कि ज़्यादातर दर्दी के दरजे में बरताव रहे और अगर उतार हो तो दरजे जहदी ही में, इससे नीचे नहीं, तो ज़ाहिर है कि रफ़्ता रफ़्ता दर्दी की गति प्राप्त होकर निशाना एक मंजिल नज़दीक हो जावेगा।

हिदायत तीसरी।

१४—इन बातों के बयान करने से ग़रज़ यह है कि जिज्ञासू इस बात की चौकीदारी रक्खे कि उसका क़दम आगे ही बढ़ता चले और चाह का घटना बढ़ना उसका ज़्यादा नुक़सान न कर सके और इसके सिलसिले में लाज़िमी होता है कि जिज्ञासू अपने संग सोहबत का बहुत ख़्याल रक्खे-क्योंकि यह मन ख़रबूज़े की तरह दूसरे मन को देखकर रंग पकड़ लेता है-जहाँ तक मुमकिन हो जिज्ञासू अपने से नीचे दरजे के जीवों से वास्ता न रक्खे और पूरे गुरू के मिल जाने पर भी जब कभी मौक़ा उनके चरनों में रहने का न हो उस वक़्त भी नीचे दरजे वालों से परहेज़ करता रहे, यहाँ तक कि अगर मालूम हो जावे कि कोई शख़्स किसी वक़्त में दर्दी था मगर अब बदक़िस्मती से गिरकर टेकी यानी क़सदी रह गया है तो उससे भी अलहदा रहे। इससे यह मुराद नहीं है कि किसी को ओछी या नफ़रत की निगाह से देखा जावे बल्कि मन्शा सिर्फ़ यह है कि अपनी हिफ़ाज़त की ग़रज़ से हर किसी से बेमतलब मेल जोल न किया जावे।

१५—जिज्ञासू को यह भी चाहिए कि अगर किसी शख़्स को, जो नीचे दरजों में बरतता है, ग़ैर मामूली ख़ुश व मगन देखे तो ग़लती खाकर उससे मेल ज़ोल

इख़्तियार न कर ले। दुनिया में ख़ुशी सिर्फ़ तवज्जह की यकसूई से होती है। जैसे छोटे छोटे बच्चे लकड़ी के खिलौनों और पत्थर के टुकड़ों को लेकर निहायत ख़ुश हो जाते हैं इसी तरह दुनियादार दुनिया के मज़े व सामान हासिल होने से ख़ुश हो जाते हैं और ऐसे ही नहसी, वहसी व क़सदी जीव भी अपने अपने अङ्ग में बरतने पर ख़ुश व मगन दिखलाई दे सकते हैं।

ग़लत समझौती दूसरी व जवाब।

१६—अक्सर लोग बहुत कुछ ज़ोर इस बात पर देते हैं कि सब से आला परमार्थ तो परोपकार और देश की उन्नति करना है, मनुष्यों की सेवा मालिक ही की सेवा है, अभ्यास के लिए आज कल मौक़ा नहीं है क्योंकि शरीर में बल ही नहीं है और इतनी फ़ुरसत कहाँ है कि परमार्थ के निमित्त खोज व तलाश की जावे, लोग भूखों मर रहे हैं, अविद्या और बीमारियों ने भाइयों को दबा रक्खा है, दूसरे मुल्कों के लोग अन्धाधुन्द तरक़्क़ी कर रहे हैं और हमारे देश की तिजारत बिलकुल ग़ायब हो रही है इस लिए देश की सेवा, क़ौम की सेवा और परोपकार ही असल सच्चा परमार्थ आज कल के लिए है, इसको छोड़कर अपने उद्धार या मुक्ति के लिए चुप चाप कोशिश करना निहायत ख़ुदग़र्ज़ी की बात है वग़ैरह वग़ैरह। इस क़िस्म की

बातें पढ़े लिखे और प्रसिद्ध आदमियों के मुख से सुनकर व नीज ख़्याल करके कि यह लोग अपने ज़ाती नफ़े को छोड़-कर दूसरों को फ़ायदा पहुँचाने की फ़िक्र में गले जाते हैं, मुमकिन है कि जिज्ञासू धोका खा जावे और तलाश का सिलसिला छोड़कर परोपकार में उलझ जावे, इस लिए उसकी आगाही के लिए ऊपर लिखे हुए ख़्यालात की थोड़ी सी छान बीन की जाती है।

१७—ज़रा ग़ौर करने से मालूम होगा कि इन ख़्या-लात की तह में दरअसल ख़ुदग़रज़ी और भोग विलास की ज़बरदस्त चाह धरी हुई है। अन्तर के अन्तर में मन चाहता है कि मुझ को दूसरे मुल्क के वासियों की तरह धन, हुकूमत और आदर मिले ताकि जिस तरह और लोग दुनिया के मज़े ले रहे हैं-मैं भी लेने लगूँ-और मेरी औलाद, मेरे रिश्तेदार व मेरे संगी साथी सब के सब दूसरी क़ौमों की तरह फूलें और फलें। चूँकि अपने बल से कोई सूरत इन चाहों के पूरा होने की दिखलाई नहीं देती इस लिए अपनी क़ौम व मुल्क को जगाने व आगाह करने व बीमारी वग़ैरह दुख दूर करके कोशिश करने के क़ाबिल बनाने की तजवीजें मन सोचता है ताकि मिल जुल कर सब की जानिब से कोशिश हो और कामयाबी की सूरत निकल आवे। तवारीख़ में ऐसी बहुत सी मिसालें मिलेंगी कि काम-याबी हो जाने पर खुद इस क़िस्म के देशभक्त परोपकारी

को या उसके संगी साथियों को जब हस्वदिलख़्वाह हिस्सा न मिला तो या तो उसने बग़ावत का झंडा खड़ा किया या ग़ुस्से में जल भुन कर ख़ुदकुशी कर ली या अपने देश के आदमियों को कृतघ्न व कमीना कहता हुआ दूसरे देश में जा बसा। ज़ाहिर है कि अगर इसकी ग़रज़ ज़ाती नफ़े की न होती और सिर्फ़ देश का फ़ायदा मन्ज़ूर होता तो यह नाराज़गी और भड़कन नमूदार न होती।

१८—अलावा इसके देखा जाता है कि सभी देशभक्त अपने अपने देश की तरक़्क़ी व बेहबूदी चाहते हैं, सब को यही फ़िक्र रहती है कि उनका प्यारा देश बढ़कर सुखी हो और उनकी क़ौम की आमदनी व ताक़त सब पर फ़ायक़ रहे-और यह भी ज़ाहिर है कि वही शख़्स, जो आज एक मुल्क का वाशिन्दा होने की वजह से उस मुल्क के लिए मरा जाता है, मरकर दूसरे देश में जन्म पाने पर पहले मुल्क की जड़ काटने और दूसरे मुल्क की बेहबूदी के लिए जान देने को तैयार होगा। इससे साफ़ हो जाता है कि परोपकार व देशोन्नति के ख़्यालात अपने सम्बन्ध, अपने नफ़े नुक़्सान और अपने ही भोग विलास की चाह की बुनियाद पर क़ायम होते हैं, न कि बेग़रज़ाना दूसरों को नफ़ा पहुँचाने के उसूल पर। इसी क़िस्म के देशभक्तों व परोपकारियों की मेहरबानी से देर अबेर एक मुल्क दूसरे पर चढ़ाई करता है जिससे ग़रीब प्रजा पर अनेक तरह की

तबाही आती है और बेगुनाहों के खून की नदियाँ वह जाती हैं और देशभक्तों की बेग़रज़ाना सेवा का यह फल प्रकट होता है।

१६—मालूम होना चाहिए कि इसमें तो कोई शुबह नहीं है कि दूसरों की सेवा करना बड़ी उत्तम बात है लेकिन इसके ये मानी नहीं हैं कि जिसके दिल में जो कुछ आवे कर बैठे और जिनकी सेवा की जाती है उनके लिए आख़िर में नतीजा अच्छा हो या बुरा इसकी परवाह न हो।

ज़िक्र है कि किसी शख़्स की एक रीछ से दोस्ती थी, दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे, एक बार जब वह शख़्स सो रहा था एक मक्खी उड़ उड़ कर कभी उस के मुँह पर कभी नाक पर बैठती थी। रीछ ने मुहब्बत में आकर कई बार मक्खी को उड़ाया मगर वह बाज़ न आई, आख़िर उसने मक्खी का फ़ैसला करने की ग़रज़ से जब कि मक्खी दोस्त के मुँह पर बैठी थी बड़े ज़ोर से थप्पड़ मारा, इससे मक्खी तो मर गई मगर साथ ही पंजों के लगने से दोस्त का मुँह लहूलुहान हो गया।

ज़ाहिर है कि ऐसी सेवा न ही होती तो अच्छा था। इसी तौर पर सेवा करने से यह भी मतलब नहीं हो सकता कि जो कुछ लोग कहें वही कर दिया जावे। अगर कोई शख़्स बिला सोचे समझे ऐसा करेगा तो नतीजा वही होगा जो मेंडकों का हुआ था।

एक तालाब में बहुत से मेंडक रहते थे। मुल्क में बादशाह की जाह व हशमत का हाल नहाने वालों से सुनकर उनके दिल में ख़्याल आया कि हम को भी बादशाह मिले तो ठीक हो। सब ने मिलकर बृहस्पति देवता से अर्ज़ की कि कोई बादशाह हम को भी बख़्शा जावे। देवता ने एक लकड़ी का टुकड़ा तालाब में फेंक दिया और कहा कि यह तुम्हारा बादशाह है। मेंडकों को लकड़ी के टुकड़े की खामोशी व सादगी पसन्द न आई, फिर सब ने देवता से अर्ज़ की कि महाराज! यह बादशाह हम को पसन्द नहीं है, मुल्क में ऐसा ज़बरदस्त और शान व शौकत का बादशाह सुनने में आता है हम को भी वैसा ही इनायत हो। देवता ने मेंडकों की माँग सुनकर एक लक़लक़ जानवर उनके हवाले कर दिया और कहा कि लो तुम्हारी माँग पूरी की गई। नतीजा यह हुआ कि चन्द ही दिनों में लक़लक़ ने सब के सब मेंडक साफ़ कर डाले।

मतलब यह है कि सच्ची व असल सेवा करना आसान व हर किसी का काम नहीं है बल्कि निहायत ज़बरदस्त ज़िम्मेवारी और कठिनाई का मुआमला और सिर्फ़ अधिकारी पुरुष के बस की बात है।

२०—यह भी जानना चाहिए कि अगर किसी में क़ाबिलियत आला दरजे की सेवा करने की है और वह अपनी पूरी क़ाबिलियत को इस्तेमाल में लाने के बजाय

ऐसी मामूली सी सेवा करके चुप हो जाय जिसमें उसका मन रस लेता है तो उन लोगों के सामने जो अवाम की सच्ची सेवा करना अपना फ़र्ज़ समझते हैं ऐसा शख़्स कायर और ख़ुदग़रज़ समझा जावेगा। मसलन् किसी जगह क़हत पड़ रहा है, वहाँ के लोग ग़रीबों की सहायता के लिए कमेटी मुक़र्रर करते हैं, कमेटी के मेम्बरों में से एक की आमदनी सौ रुपये माहवार है और उसके घर में करोड़ों रुपये दबे पड़े हैं, अगर वह शख़्स अपनी माहवारी आमदनी का आधा या कुल का कुल भी ग़रीबों के खिलाने पिलाने में सर्फ़ कर दे लेकिन घर से रुपया निकाल कर सर्फ़ करने की तकलीफ़ गवारा न करे तो वह शख़्स निहायत तंगदिल व देशघाती समझा जावेगा, न कि परोपकारी और देशहितैषी। इसी तरह पर ग़ौर करना चाहिए कि हर इन्सान में अलावा तन व मन के निज जौहर सुरत यानी आत्मा की शक्ति मौजूद है। संसार में अनेक प्रकार के दुख व क्लेश तन व मन सम्बन्धी फैल रहे हैं। आत्मबल के सामने तन व मन की शक्तियाँ निहायत तुच्छ व कमज़ोर हैं और आत्मानन्द के मुक़ाबिले में तन व मन के भोग बिलास के रस व आनन्द झूठे व फीके हैं और आत्मिक दशा की आज़ादगी व ज्ञान के सामने देह व मन का संग सख़्त क़ैद और तिमिरखण्ड

में वास की हैसियत रखता है। आत्मा का परमात्मा यानी कुल्ल-मालिक से अगर योग हो जावे तो जो परम गति, परम आनन्द और परम ज्ञान इन्सान की आत्मा को प्राप्त होंगे उनका वार पार नहीं है। फिर इस क़िस्म का मौक़ा और क़ाबिलियत रखता हुआ अगर इन्सान मेम्बरकमेटी की तरह अपने घर यानी घट को खोदने की फ़िक्र न करे और इसमें जो जौहर रक्खा है उसको सर्फ़ में लाने के ख़्याल के बजाय अपने तुच्छ तन व मन ही की सेवा को काफ़ी समझे और सेवा करके दूसरे लोगों को तन व मन ही के छिनभंगी और तुच्छ सुख व आनन्द के सामान पहुँचा कर मगन हो जावे तो सच्चे सेवकों के मुक़ाबिले में क्या हैसियत इसकी हो सकती है। अगर किसी वक़्त इसको सुमति आवे और दूसरों की फ़िक्र को तजकर यह तवज्जह के साथ ख़ुद करनी करे और आत्मशक्ति को जगावे तो क्या उस वक़्त आँख खुलने पर ख़ुद इसको अपनी पिछली परोपकार व उन्नति की कार्रवाई वैसी ही न दरसेगी जैसा कि हम लोगों को नादान बच्चों का कमाई के ख़्याल से पल्ले में रेत व कंकर भर भर के लाना व बड़े हर्ष व फ़ख़्र के साथ पेश करना और इस मूर्खता में नाहक़ अपने बेशक़ीमती कपड़ों व बदन का मटियामेल करना मालूम होता है।

२१—इस वक़्त यह भी ग़ौर किया जा सकता है कि ऐसे पुरुष को, जो दूसरों की तरह जोश में भर-

कर परोपकार में नहीं लगता है बल्कि दूसरों की मानिन्द अपने तईं निवल व बँधा हुआ देखकर दुनिया के मज़ों से रुख़ मोड़कर अव्वल एक अरसे तक चुपचाप कोशिश अपने उद्धार व आज़ादगी के लिए करता है और बाद में कामयाब होकर हर एक अधिकारी व जिज्ञासू को बिलातकल्लुफ़ सब भेद समझाकर मुनासिब करनी करवाता है और उसकी कामयाबी के लिए इन्तिज़ाम करता है, ख़ुदमतलबी आलसी या मुर्दादिल ख़्याल करना कैसी नादानी की बात है।

हिदायत चौथी।

२२—इस कुल बयान से मालूम होगा कि जिस किसी का इरादा वाक़ई सच्ची सेवा करने का हो उसको चाहिए कि अव्वल वह कोशिश व जतन करके अपनी आत्मा की शक्तियाँ जगावे और तन, मन व उनके भोगों के बजाय आत्मानन्द की तरफ़ मुख़ातिब हो-ऐसा करने में उसको ज़ाती तजरुबे से मालूम हो जावेगा कि दुखों के असल कारण क्या हैं और किस तरह वे कारण हटाये जा सकते हैं। इस तजरुबे व ज्ञान की बदौलत और आत्मबल यानी सुरत-शक्ति की सहायता से वह लोगों को उस रास्ते पर कामयाबी के साथ ला सकेगा जिस पर चलकर वे उसके मुवाफ़िक़

सदा के लिए दुखों से न्यारे और परम और अविनाशी आनन्द को प्राप्त हो जावेंगे, नीज आत्मा यानी सुरत के जागने और हृदय के पवित्र होने से उसके ख़्यालात निहायत वसी और बुलन्द हो जावेंगे और उसको सभी इन्सान क्या बल्कि प्राणीमात्र तन व मन की क़ैद में क़ाबिले रहम हालत में पड़े हुए दिखलाई देंगे और इस वजह से सब के लिए यकसाँ दया और रहम उसके अन्तर में आवेगा और जहाँ तक हो सकेगा ऐसा शख़्स अपनी शिक्षा, सलाह मशवरे व मिसाल से अनेक जीवों का कल्याण करावेगा। जो जो लोग उसके असर में आवेंगे उनका भी हृदय रफ़्ता रफ़्ता कोमल और चित्त संसार से उपराम होता जावेगा और इस तरह धन, दौलत, मान, बड़ाई के लिए जो क़त्ल, ख़ून और बेरहमियाँ होती हैं उनके लिए कम से कम मौक़ा रह जावेगा। ऐसे लोग किसी क़दर संतोष व धीरज के साथ पिछले कर्मों की वजह से जो दुख सुख आते हैं उनको बरदाश्त करते हुए और जगत से छूटने की जुक्ती में कामयाबी हासिल होती देखकर दिल ही दिल में किसी क़दर मगन होते हुए अपने भाग सराहेंगे और हिदायत के बमूजिब करनी करते हुए उस शख़्स की तरह एक दिन परम आनन्द को प्राप्त होंगे, दूसरे लफ़्ज़ों में वे लोग इस वक़्त भी किसी क़दर आराम व इतमीनान के साथ जिन्दगी बसर कर सकेंगे

और आयन्दा के लिए भी उनके वास्ते परम सुख व आनन्द की प्राप्ति का माकूल इन्तिज़ाम रहेगा।

हिदायत पाँचवीं।

२३—जिज्ञासू को मालूम होना चाहिए कि उसकी हालत एक बीमार की सी है और परमार्थी कार्रवाई बतलाने वाले मिस्ल इलाज करने वालों के हैं और परमार्थी कार्रवाई जो वे बतलाते हैं बतौर दवा दारू के है, इस लिए इलाज शुरू कराने से पहले मरीज़ की तरह इसको ख़्याल रखना चाहिए कि हकीम ऐसा हो जो बीमारी को जड़ से खोने का इन्तिज़ाम कर सके। अकूसर ऐसा होता है कि बाज़ हकीम या डाक्टर लोगों के इलाज से रोग जल्द दूर हो जाता है लेकिन थोड़े अरसे बाद दुगुने चौगुने ज़ोर से ज़ाहिर होता है, बाज़ मरतबा रोग बदन के एक हिस्से से हटकर दूसरी जगह पर प्रकट हो जाता है और बाज़ दफ़ा एक शक्ल से हटकर दूसरी शक्ल में नमूदार होता है। ऐसा इलाज कराने में ज़ाहिर है कि बजाय नफ़े के सरासर नुक़सान है और थोड़े दिन की ज़ाहिरा तन्दुरुस्ती हासिल करके उमर भर का रोग ख़रीद लेना है। इसी तरह बहुत सी जमाअतों में इस क़िस्म की कार्रवाइयाँ व हिदायतें प्रचलित हैं जिनपर अमल करने से किसी किसी को

जल्द ही मन के मुवाफ़िक़ कुछ आराम मालूम होने लगता है मगर कुछ अर्से के बाद मायूसी बल्कि सख़्त मुसीबतों का सामना करना पड़ता है । मसलन् देखने में आता है कि बाज़ जमाअतें तालीम देती हैं कि अपना आराम छोड़कर दूसरे लोगों को सुख पहुँचाओ । इसमें शुबह नहीं कि यह बहुत बढ़की बात है और इस अङ्ग में बर-तने वाला ज़रूर किसी क़दर संसार से उपराम और अपने आराम से बेपरवाह रहता है और उसका मन व इन्द्रियाँ भी बवजह एक ख़ास जानिब तवज्जह का झुकाव होने के काम, क्रोध वग़ैरह विकारी अङ्गों में ज़्यादा बरतने नहीं पातीं मगर हज़ारों मिसालें इन में ऐसे लोगों की मिलें-गी कि जिनके अन्दर अहङ्कार अपनी कार्रवाई का हद से ज़्यादा भर गया है और जो जगत की वाह वाह और मान बड़ाई के रस में सदा भीगे रहते हैं और अगर कोई यह कसर उनकी उनको जतलावे तो उससे सख़्त नाराज़ होते हैं और उसको सख़्त और सुस्त कहते हैं । बहुत से लोग उनकी उदारता और मन इन्द्रियों पर ज़ाहिरा क़ाबू का हाल देख या सुन कर उनके मोतक़िद हो जाते हैं और असल हाल को नहीं देखते कि मन का रोग एक तरफ़ से हटकर दूसरे रुख अत्यन्त वेग के साथ प्रकट हो रहा है । इस बयान से यह मतलब नहीं है कि दूसरे लोगों की बुराई ज़ाहिर की जावे बल्कि मन्शा सिर्फ़ यह है कि जिज्ञासू को आगाह

किया जावे कि वह समझ बूझ कर इलाज के लिए अपने तईं किसी के सुपुर्द करे।

ग़लत समझौती तीसरी व जवाब।

२४—ऐसा भी हो सकता है कि जिज्ञासू की साफ़ २ बातें सुनकर बाज़ लोग उसको समझौती दें कि भाई, आज कल ऐसे सच्चे और पूरे गुरू कहाँ हैं; अवतार, साध, सन्त, महात्मा, उस्ताद और कामिल पिछले वक़्तों में होगये, यह कलियुग का ज़माना है, इस तलाश को छोड़कर चुपचाप से हरि का भजन करो या भलाई के काम करो, इस ख़ाक छानने में क्या रक्खा है, हम को भी पहले ऐसा शौक़ था, बीस पच्चीस बरस उनके फ़िराक़ में धक्के खाकर सब्र करके बैठना पड़ा, वग़ैरह वग़ैरह। ऐसी बातें सुनकर मुमकिन है कि जिज्ञासू का दिल बैठ जावे और बहकाये में आकर समझौती देने वालों की तरह से आलस व बलबनई के अङ्गों में बरतने लगे।

२५—जिज्ञासू को सदा प्रतीति रखनी चाहिए कि अगर कोई सच्चा मालिक है तो वह अवश्य ऐसे खोजी भक्त की इमदाद करेगा जो उससे मिलने की सच्ची चाह रखता है और जो यथाशक्ति खोज व तलाश का सिलसिला जारी रखता है। ऊपर लिखी हुई समझौती देने वाले लोग जब कि जानते तक नहीं कि सच्ची जिज्ञासा

किसको कहते हैं फिर कोशिश व तलाश क्या खाक उन्हों ने की होगी। इधर उधर की बातें सुन सुना कर दिल में जमा कर लेने की ग़रज़ से जब तब किसी के पास जा बैठे या कभी सैर या हवा बदल करने की दिली आरज़ू लिये हुए तीर्थों या पहाड़ों में घूम आए और इसका नाम जिज्ञासा रख दिया। जिज्ञासू को यह मालूम करके शायद हैरानी होगी कि जिस वक़्त में राम, कृष्ण, कबीर, नानक व शम्सतबरेज़ वग़ैरह सच्चे अवतार व सन्त महात्मा प्रकट थे उस वक़्त भी लोग इसी तरह की बातें बराबर बनाते थे और बजाय खबर पाकर उनके चरणों में हाज़िरी देने और परख पहिचान करने के घर बैठे उनको हर तरह के इलज़ाम लगाकर दिल खुश कर लेते थे।

इस क़दर तो कहना इन लोगों का दुरुस्त हो सकता है कि साध सन्त या पूरे गुरू दुर्लभ हैं और यह जो हज़ारों कपड़े रँगे भेष दिखलाई देते हैं कामिल उस्ताद नहीं हैं मगर यह कहना कि सच्चे साध सन्त हैं ही नहीं और सब के सब परमार्थी शिक्षक पाखण्डी व दग़ाबाज़ हैं, क़तई ग़लत है। साध सन्त यानी सच्चे गुरू की तलाश के सिलसिले में सिवाय इस विघ्न के तीन और फ़ासिद ख्यालात आम तौर पर रायज हैं। यहाँ पर उनका भी ज़िक्र करना ज़रूरी मालूम होता है।

ग़लत समझौती चौथी व जवाब ।

२६—अव्वल यह कि गुरू धारण करना तो गुलामी व मर्दुमपरस्ती करना है, सिवाय परमात्मा के किसी के आगे सर झुकाना सख़्त गुनाह है, तुम ख़ुद आत्मा हो और परमात्मा का अंश हो फिर क्यों दूसरे इन्सान को जिसमें परमात्मा के सत्ता, चैतन्यता, आनन्द वग़ैरह गुणों में से एक भी दिखाई नहीं देता और हाड़, माँस, चाम की क़ैद में होने की वजह से जिसके बदन व बुद्धि की ताक़तें औरों की तरह महदूद हैं यानी जो, सर्वशक्तिमान होना तो दूर रहा, दस बीस मन बोझ भी नहीं उठा सकता, जिसने कोई नया यन्त्र या कल ईजाद करके सायन्स की कोई नई बात प्रकट करके सुबूत अपनी सर्वज्ञता का नहीं दिया, जिसको बीमारी, तक़लीफ़ वग़ैरह और आदमियों की तरह होने से परम आनन्द की ख़बर भी नहीं हो सकती, जिसके जिस्म या चेहरे से कोई प्रकाश भी नहीं होरहा है और परमात्मा को छोड़ जिसमें ऋषि, मुनियों का सा शारीरिक बल भी नहीं है, जिसको ऋषि, मुनियों की सी शास्त्रों से वाक़फ़ियत और संस्कृत विद्या में महारत हासिल नहीं है और जिसका ऋषि, मुनियों की तरह से लम्बा चौड़ा व चमकदार बदन भी नहीं है, क्यों इतना सिर पर चढ़ाया जाता है । यह ऐतराज़ ज़ोर शोर के साथ बयान किये जाने की वजह से बड़ा ज़बरदस्त

मालूम होता है और चूँकि इसमें श्रोता की किसी क़दर तारीफ़ और मान बड़ाई से दर परदा व्याफ़त होती है और हिन्दू खान्दान में जन्म पाने से क़ुदरती तौर पर जो महिमा संस्कृत विद्या व ऋषियों मुनियों की चित्त में बसी है उसकी पुष्टि होती है इस लिए अक्सर लोग इसपर फ़रेफ़्ता होकर आँखें बन्द कर लेते हैं।

यह बिलकुल दुरुस्त है कि आत्मा यानी सुरत परमात्मा यानी मालिक का अंश है और हर देहधारी के अन्दर वह आत्मा मौजूद है मगर याद रखना चाहिए कि यह मन जो इस क़दर अहङ्कार के बोल बोलता है आत्मा नहीं है और न ही सच्चे परमात्मा का अंश है—यह मन जड़ शरीर से बेशक बहुत बढ़कर चैतन्य है मगर सुरत यानी आत्मा के मुक़ाबले में जड़ है। सच्चे साध सन्त और जीव में यह फ़र्क़ है कि उनके सुरत व मन दोनों चैतन्य यानी जगे होते हैं और जीव का सिर्फ़ मन, इस लिए अगर जीव, जो कि मनरूप है, साध सन्त को, जो कि सुरत रूप हैं, सिजदा करे तो क्या बुरी बात है। हर किसी का मन जान के लिए क़ुदरती तौर पर सुरत का मोहताज है और सुरत ही के बल से मन का काम चलता है इस लिए मन का सुरत की ग़ुलामी करना क़ुदरती बात है। अलावा इसके ख्याल करना चाहिए कि हम लोगों का अपना ही तन नहीं बल्कि सैकड़ों हज़ारों के तन व मन अपने सुख व नफ़े व गुज़र औक़ात के लिए दूसरे

मन की खिदमतगुज़ारी करते हैं। देखिये, जो कुछ हाकिम या अफ़्सर चाहता है मातहतों को तन व मन से उसकी तामील करनी पड़ती है। मैदाने जंग में सिपाही व अफ़्सर लोग राजा बादशाह के हुक्म की तामील में अपने तन का जख़्मी बल्कि पुरज़े पुरज़े होजाना और मन का महीनों दुख सहना क़बूल करते हैं। अगर ये सब बातें दुरुस्त हैं फिर एक मन का दूसरे आत्मा यानी सुरत को, जो खुद चैतन्य है और अभ्यास करके कुल्ल मालिक से योग हासिल किये हुए है, दुक्खों से निवृत्ति और उसकी सी गति हासिल करने के लिए बड़ा जानना और परस्तिश करना दुरुस्त है या क्या? अगर वाक़ई आत्मा परमात्मा का अंश है और सिर्फ़ परमात्मा ही का सिजदा करना रवा है तो साध सन्त में जो आत्मा मालिक से मेल किये हुए मौजूद है उसकी परस्तिश करना इन्सान की परस्तिश हुई या मालिक की? यह कोई नहीं कहता है कि जिस किसी इन्सान की चाहो परस्तिश व भक्ति करो बल्कि यही कहा जाता है कि ऐसे साध सन्त की तलाश करो कि जिनकी सुरत जगी है और जिनको मालिक से मेल यानी वस्ल हासिल है और मिल जाने पर उनकी भक्ति करो, उनकी भक्ति व पूजा मालिक की पूजा है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:—

‘चूँकि करदी ज़ाते मुर्शिद रा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल॥’

तर्जुमा—जो कि तुझ को मिल गये सतगुरु दयाल।
होगया मालिक पयम्बर से विसाल॥

कबीर साहब का भी क़ौल है:—

साध मिले साहब मिले अन्तर रही न रेख।
मनसा वाचा कर्मना साधू साहब एक॥
कबीर दरशन साध के साईं आवें याद।
लेखे में सोई घड़ी बाक़ी के दिन बाद॥

२७—और यह जो व्यापक परमात्मा का ध्यान व पूजा की जाती है उसकी हक़ीक़त भी मुलाहिज़ा करनी चाहिए। आँखें बन्द करके ख्याल की मदद से आकाश से व्यापक, सूरज से चमकीले परमात्मा का अनुमान करना और इस ख्याली सरूप को, जो कि अपने ही मन की ताक़त की पैदावार है और जिसका इन्द्रियों द्वारा हासिल किये हुए ज्ञान या तजरुबे पर इनहिसार है, परमात्मा का ध्यान कहा जाता है और ऐसी हालत में बैठे हुए मनमाने ख्यालात उठाना निराकार की पूजा समझी जाती है। क्या वजह है कि इस कार्रवाई को मन बुद्धि की पूजा न कहा जावे।

२८—यह भी समझना चाहिए कि इन्सान का शरीर सुरत की शक्ति रचती है क्योंकि अगर मन रचता तो जैसे और कलों या यन्त्रों की, जो इन्सान का मन बनाता है, बनाने वाले मन को पूरी वाक़फ़ियत रहती है इसी तरह रचने वाले मन को शरीर की बनावट की भी खबर

होती, मगर ऐसा देखने में नहीं आता है। अलावा इसके सब कोई जानता है कि जब तक सुरत तन में रहती है बराबर इसकी परवरिश व वृद्धि होती रहती है और जिस दम सुरत तन से न्यारी होती है इसके अन्दर सड़न शुरू हो जाती है और रफ़्ता रफ़्ता अलग अलग होकर तन के सब तत्त्व बाहर तत्त्वों में जा मिलते हैं। इससे साफ़ जाहिर होता है कि शरीर के रचने व क़ायम रखने वाली सुरत ही की शक्ति है और मन शरीर का रचने वाला नहीं है अलबत्ता जैसे जैसे ख़्यालात व वासनाएँ किसी के मन में उठती हैं वैसे ही कर्म इन्सान का शरीर करता है और ख़्यालात व वासनाओं के असर से बदन में तब्दीली भी हो जाती है-जैसे गुस्से की हालत में आँखें लाल, चेहरा डरावना दिखाई देता है और जो लोग एक अर्से तक बेग के साथ ख़ास वासनाओं में बरतते हैं उनका चेहरा ख़ास कर और बाक़ी बदन भी बदल जाता है-मसलन् कोई ग़म या फ़िक्र लग जाने पर इन्सान का जिस्म सूखकर ग़मे मुजस्सिम बन जाता है और बेरहमी के काम करने वालों के चेहरे की अदल पहिचान है-इस लिए मालूम हुआ कि मन की बासनाओं के अनुसार तन का इस्तेमाल और इसमें तब्दीलियाँ होती रहती हैं-इससे यह भी जाहिर है कि शरीरों में भेद जो जन्म से होता है वह भी पिछले संस्कारों व बासनाओं की वजह से होता है। हासिल क़लाम यह है कि

इस घाट पर तन सुरत यानी आत्मा की शक्ति के बल से पिछले संस्कारों व वासनाओं के अनुसार रचा जाता है और जब तक सुरत का सम्बन्ध रहता है तन जरूर क़ायम रहता है लेकिन वासनाओं के इजहार के मुवाफ़िक़ तन में तब्दीलियाँ होती रहती हैं। जो यह विचार सही है तो अगर कोई ऐसे पुरुष हों कि जिन्हों ने आत्मा की शक्ति को जगा लिया है और मन पर पूरी फ़तह हासिल कर ली है, जिनके अन्दर कोई भी संसारी वासना पर नहीं मार सकती, जिनकी आत्मा यानी सुरत परमात्मा यानी कुल्ल-मालिक से मेल किये है और जिनके हृदय में हरदम मालिक के चरणों का प्रेम लहराता है तो क्या इस दशा का कोई असर उनके तन पर न आता होगा? मालूम होवे कि जिस किसी को इस जन्म में ऐसी गति प्राप्त हुई है जन्म लेते वक़्त अव्वल तो उसकी वासनाएँ आम जीवों की तरह मलीन नहीं होंगी और दूसरे जो कुछ वासनाएँ थीं भी वे भी अभ्यास के जरिये से साफ़ हो गई होंगी और तन व मन दोनों की कदूरत नाश हो गई होगी। ऐसे पुरुष का तन उनकी सुरत-शक्ति ने क़ायम रक्खा हुआ है, उनका मन निहायत पवित्र है और क़ाबू में है और इस लिए किसी नामुनासिब कार्रवाई के तन से बन आने और संसारी अङ्ग के प्रकट होने से तन में तब्दीली होने का मौक़ा नहीं है—और जोकि उनकी सुरत का मालिक से साक्षात्

मेल है इस लिए उनके तन को अगर मालिक यानी परमात्मा का मन्दिर कहा जावे तो बेजा न होगा—और अगर मसखरे को देखकर हँसी का आना और दुखिया का हाल सुनकर दिल का दुखी होना क़ुदरती बात है तो ऐसे महापुरुष के दर्शन व बचन से परमार्थी असर का पैदा होना भी लाज़िमी ठहरता है और ज़ाहिर है कि जितनी भी महिमा व बड़ाई ऐसे चोले की की जावे और जितनी भी भक्ति व ख़िदमत ऐसे पुरुष की की जावे ऐन जायज़ व दुरुस्त है।

२६—ऊपर के बयान से यह भी ज़ाहिर है कि साध सन्त को हाड़, माँस, चाम की क़ैद में समझना नादानी है। देखने में उनके जिस्म व मन दोनों मौजूद हैं मगर जीवों की तरह उनकी इनमें आसक्ति नहीं है। देखने में सिवाय तन व मन की मामूली शक्तियों के उनमें कुछ नहीं है मगर अन्तर में सुरत-शक्ति, जो कि आदि व सर्वोपरि शक्ति है, चैतन्य है और अगर हम लोग उनकी असली हालत को न देख सकें तो ज़ाहिर है कि क़सर हमारे में है, न कि उनमें।

सच्चे गुरू की पहिचान।

३०.—सवाल किया जा सकता है कि कोई तरकीब ऐसी भी है कि जिससे साध सन्त की असली हालत की ख़बर पड़ जावे ताकि और इन्सानों से उनकी तमीज़

की जा सके। इसका जवाब पूरा पूरा दिया जा सकता है मगर यह मुआमला समझ में ज़रा धीरज के साथ विचार करने से आवेगा। ख़्याल करो कि एक शख़्स की निस्बत अफ़वाह मशहूर है कि वह इल्मे रियाज़ी में माहिर है। उसकी माहियत की थोड़ी भी परख करने के लिए ज़ाहिर है कि परख करने वाला ख़ुद इस इल्म से अच्छी ख़ासी वाक़फ़ियत रखता हो और पूरी पूरी परख करने के लिए ज़रूरी है कि परख करने वाला उससे बढ़कर या कम अज़ कम उसके बराबर वाक़फ़ियत रखता हो। नावाक़िफ़ शख़्स की मजाल नहीं है कि कुछ भी सच्ची पहिचान उसके इल्म की कर सके। इसी तरह पूरी पूरी परख पहिचान साध सन्त की जीव नहीं कर सकता है यानी जीव के लिए, जो हृदय ही के स्थान से सब कार्रवाई करता है और मन इन्द्रिय द्वारा प्राप्त हुए तजरुबात पर जिसका ज्ञान ख़त्म है, असल तौर पर यह जानना कि फ़ुलाँ की सुरत का मालिक से मेल है नामुमकिन है। मन इन्द्रिय के घाट के इल्म व तजरुबे सुरत के घाट के इल्म व तजरुबों से न्यारे हैं और मन इन्द्रिय की रसाई सुरत के घाट तक क़तई नहीं है।

३१—ज़रा ग़ौर से देखना चाहिए कि हम लोगों का ज्ञान क्या चीज़ है और कैसे प्राप्त होता है। मसलन् आँख से चीज़ों के रूप दिखलाई देते हैं। जिस चीज़ के रूप का ज्ञान हासिल होता है अव्वल उसका अक्स हमारी आँख

के पर्दे पर पड़ता है। आँख के अन्दर एक रग है जिस-में ज्योति है और उस रग का आँख के पर्दे से मेल है। अक्स पड़ते ही उसका खास असर ज्योति के द्वारा ज्ञा-नेन्द्रिय की धार की मारफ़त द्रष्टा तक पहुँच जाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में द्रष्टा को रूप का ज्ञान ज्ञानेन्द्रिय की धार व ज्योति व आँख के पर्दे व चीज़ के अक्स के द्वारा हासिल होता है। इसी तरह कान से आवाज़ सुनने में आती है और दूसरी इन्द्रियों से रस, गन्ध वग़ैरह का ज्ञान प्राप्त होता है। मतलब यह है कि बाहर में सूरज या चिराग़ के प्रकाश की मदद से चीज़ का रूप आँख के पर्दे तक पहुँचता है और आँख में अग्नितत्त्व मौजूद होने से द्रष्टा को ज्ञान रूप का हो जाता है। ऐसे ही आकाश की मदद से आवाज़ का असर कान के पर्दे तक पहुँचता है और वहाँ पर आ-काशतत्त्व मौजूद होने से द्रष्टा को ज्ञान आवाज़ यानी शब्द का होता है। इसी तौर पर ज़बान पर जलतत्त्व और सूँघने के मुक़ाम पर वायुतत्त्व मौजूद होने से बाहर की चीज़ों के रस व गन्ध का तजरुबा होता है। अगर आँख की रग में ज्योति न हो तो रूप का कुछ ज्ञान नहीं हो सकता और यही वजह है कि कान के ज़रिये रूप का और आँख के ज़रिये शब्द का ज्ञान नहीं हो सकता यानी हर इन्द्रिय के स्थान पर जो तत्त्व मौजूद है उसी के मुतअल्लिक़ बाहरी पदार्थों का ज्ञान द्रष्टा को उस इन्द्रिय के द्वारा प्राप्त

हो सकता है। अगर यह बात दुरुस्त है तो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सिवाय रूप, रस, गन्ध वग़ैरह सम्बन्धी पदार्थों के और किसी का ज्ञान हासिल नहीं हो सकता और चूँकि मन व बुद्धि का कुल ज्ञान सिर्फ़ इन्द्रिय-ज्ञान ही की बुनियाद पर क़ायम है इस लिए मन, बुद्धि व इन्द्रियों की मारफ़त आत्मशक्ति* का, जो कि रूप, रस, गन्ध वग़ैरह से न्यारी है, कुछ ज्ञान हासिल नहीं हो सकता—फिर यह मालूम करना कि किसी की आत्मा का परमात्मा से मेल है या नहीं, ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में, क़तई नामुमकिन है। आत्मा की निस्बत ज्ञान हासिल करने के लिए ज़रूरी ठहरता है कि किसी ऐसी इन्द्रिय को इस्तेमाल किया जावे जिसमें ख़ालिस आत्मतत्त्व मौजूद हो। अगर यह कहा जावे कि आत्मा की धार सभी देह में मौजूद है, ख़ास इन्द्रिय की ज़रूरत कोई नहीं है, तो जवाब यह है कि हाथ व कान में भी तो अग्नितत्त्व मौजूद है फिर क्या वजह है कि हाथ व कान से रूप का ज्ञान नहीं होता। जैसे आँख की रग में ख़ालिस और बाक़ी जिस्म में रला मिला अग्नितत्त्व मौजूद होने से प्रकाश से मेल करने के लिए आँख ही को इस्तेमाल करना लाज़िमी है इसी तरह सुरत का ज्ञान हासिल

* आत्म-शक्ति तो अलग रही स्थूल शक्तियों का भी असल हाल आज तक किसी को मालूम नहीं हुआ। चुनांचे सायन्सदाँ फ़ाज़िल कहते हैं कि बिजली ख़ुद क्या चीज़ है यह कुछ मालूम नहीं है और पर्दों की मारफ़त जो कुछ यह अपना इज़हार करती है उतना ही मालूम है।

करने के लिए ऐसी इन्द्रिय का इस्तेमाल करना ज़रूरी है कि जिसमें ख़ालिस सुरततत्त्व मौजूद हो। उस इन्द्रिय को अभ्यासी लोग सुरत की बैठक का स्थान, तीसरा तिल, शिवनेत्र, चश्मे बातिन, चश्मे तहय्युर वग़ैरह नामों से पुकारते हैं। उरफ़ी का क़ौल है:—

'अज़ कमाँ ना जस्तः दर चश्मे तहय्युर करदः ज़ा।
मारफ़त को तीरे हुक्मी बर निशाँ अंदाख़्तः॥'

यानी सच्ची मारफ़त वह है कि जिसमें यह इन्तिज़ाम हो कि ख़ता न करने वाला तीर कमान से छूटा नहीं कि चश्मे तहय्युर में जा बैठा।

नतीजा यह है कि मुतलाशी को अव्वल सुरत की बैठक के स्थान का पता लेकर नई आँख जगानी चाहिए, बाद में उसको सुरत का ज्ञान हो सकता है और इसके बाद वह इस क़ाबिल हो सकता है कि दूसरे की सुरत की गति की असल परख पहिचान कर सके।

३२—दफ़आत ३० व ३१ के पढ़ने से जिज्ञासू को शायद मायूसी हो जावे कि उसको साध सन्त की परख पहिचान क़तई हो ही नहीं सकती और इस तरह वह क़तई नाक़ाबिल हो जाता है कि उनकी पवित्र मौजूदगी से फ़ायदा उठा सके, मगर यह बात नहीं है। अगर किसी के दिल में सच्चा शौक़ साध सन्त से मिलने का है तो वे दया करके ख़ुद उसको अपनी लाकलाम परख पहिचान बख़्शते

हैं और नीज़ यह भी अपनी अक़्ल व तजरुबे की मदद से अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ उनकी पहिचान कर सकता है। यह ठीक है कि कोई नहीं जान सकता है कि बिजली क्या चीज़ है मगर जिन शक्लों में वह अपना इज़हार करती है उनका मुताला करने से बिजली का बहुत कुछ हाल व नीज़ किसी जगह पर उसके मौजूद होने का काफ़ी सुबूत बहम पहुँच सकता है। इसी तरह पर साध सन्त की गति का अगरचे पूरा पता न चल सके मगर फिर भी उनके तन व मन की मारफ़त उनकी असल हालत की झलक का ज्ञान ज़रूर हासिल हो सकता है और इस ज्ञान की मदद से बहुत कुछ जाँच परख व इतमीनान किया जा सकता है। इस कहने से यह मुराद नहीं है कि साध सन्त अपने तन या मन की मारफ़त कोई मोजज़े दिखलाते रहते हैं। मोजज़ों का दिखलाना अगरचे हम लोगों के लिए ग़ैरमामूली बात है मगर उनसे इतना ही तो नतीजा निकाला जा सकता है कि मोजज़े दिखलाने वाले में फ़ुलाँ ग़ैरमामूली कार्रवाई करने की ताक़त व लियाक़त मौजूद है। मसलन् अगर कोई शख़्स सूखी लकड़ी हाथ में लेकर फ़ौरन् उसको पेड़ की शक्ल में तब्दील कर दे और उसके फल फूल लग आवें तो यह कार्रवाई देखकर सिर्फ़ यह नतीजा निकाला जा सकता है कि वह शख़्स सूखी लकड़ी में फल फूल पैदा कर सकता है लेकिन

इस बात का कुछ पता नहीं चल सकता कि आया उसके अन्दर सुरत की शक्ति जगी है या नहीं। कहने का मुद्दआ यह है कि सच्चे शौक़ीन परमार्थी को उनकी सोहबत में रहने से उनके वचन व दर्शन व दीगर कार्रवाई से खास क़िस्म का असर हासिल होता है जो और किसी संयोग में हरगिज़ हासिल नहीं हो सकता। मौलाना रूम ने फ़रमाया है:—

'तिश्नए रा चूँ बिगोई तू शिताब।
दर क़दह आब अस्त बिसिताँ ज़ूद आब ॥१॥
हेच गोयद तिश्ना कीं दावास्त रौ।
अज़ बरम् अय मुद्दई महजूर शौ ॥२॥
या गवाहो हुज्जते बिनुमा के ईं।
जिन्से आबस्तो अज़ाँ माए मुईं ॥३॥
या बतिफ़्ले शीर मादर बाँग ज़द।
के बिया मन् मादरम् हाँ अय वलद ॥४॥
तिफ़्ल गोयद मादरा हुज्जत बियार।
ताके बा शीरत बिगीरम् मन् क़रार ॥५॥
दर दिले हर उम्मते कज़ हक़ मज़ास्त।
रू व आवाज़े पयम्बर मोजज़ास्त ॥६॥
चूँ पयम्बर अज़ बिरूँ बाँगे ज़नद।
जाने उम्मत अज़ दरूँ सिजदः कुनद ॥७॥
ज़ाँ के जिन्से बाँगे ऊ अन्दर जहाँ।
अज़ कसे नशनीदः बाशद गोशे जाँ ॥८॥'

मतलव

गर पियासे से कहे कोई झपक उस पियाले में है पानी ले लपक १
ई पियासा सुन के जो कहने लगे यह कथन है मुद्दई तू हट परे २
या कहे तू दे दलीलें और गवाह वाक़ई प्याले में पानी है भरा ? ३
या कि नन्हे से कहे माता कि पें आओ बच्चा पास मेरे माँ हूँ मैं ४
बच्चा बोले माँ तू पहिले दे सुवूत पीछे से पी सकता हूँ मैं तेरा दूध ५
जिस जमाअत के कि लोगों के हिये प्यार मालिक का वसे उनके लिये ⎫ ६
सूरत और बोली पैग़म्बर की सदा हैं गे पूरे पूरे दोनों मोजिज़ा ⎭
जब पैग़म्बर ने कहा बाहर वचन जान ने उनकी गहे अन्तर चरन ७
क्योंकि वैसे बोल इस संसार में और किसी से सुन न पाये जान ने ८

इसी तरह सहजो वाई ने भी फ़रमाया है:—

साध मिले दुख सब गये मंगल भये सरीर ।
वचन सुनत ही मिट गई जनम मरन की पीर ॥
सहजो साधन के मिले मन भयो हरि के रूप ।
चाह गई थिरता भई रंक लख्यो सोइ भूप ॥

मतलव यह है कि जिस चोले के अन्दर सुरत की शक्ति चैतन्य है उस चोले की हर एक कार्रवाई में एक ख़ास असर उसका मौजूद रहता है और जैसा कि दफ़ा २६ में एतराज़ किया गया कि परमात्मा यानी मालिक के सत्, चित्, आनन्द वग़ैरह गुण उस चोले में होने चाहिएँ ज़रूर मौजूद रहते हैं । इन गुणों का इज़हार इन्सानी चोले में कैसे हो सकता है आगे बयान किया जाता है ।

३३—सच तो यह है कि हम लोगों को असल सत्ता का मुतलक़ तजरुवा ही नहीं है क्योंकि जितने पदार्थ तन

या मन सम्बन्धी तजरुबे में आते हैं उन सब के अन्दर छिन छिन में तब्दीली हो रही है। इसी तरह परम आनन्द का अनुमान भी हम लोग मन और इन्द्रिय द्वारा प्राप्त हुए रस व आनन्द की रोशनी में करते हैं—यही हाल चैतन्यता यानी ज्ञान व प्रकाश का है। अलावा इसके ख़्याल करना चाहिए कि अगर सच्चिदानन्दस्वरूप मालिक सब जगह मौजूद है तो एक पत्थर का टुकड़ा, जो हम ज़मीन से उठाते हैं, उसके भी ज़र्रे ज़र्रे में उसकी मौजूदगी लाज़िमी है मगर हम लोगों के ख़्याल के बमूजिब मालिक के जैसे गुण हैं उनका नाम व निशान भी उस पत्थर के टुकड़े में नहीं मिलता यानी न उसमें असल सत्ता है, न ज्ञान है और न आनन्द है और दफ़ा २६ में जो एतराज़ात साध सन्त के मन व तन की शक्तियों की निस्बत उठाये गये उस पत्थर के टुकड़े पर भी, हालाँ कि उसके ज़र्रे ज़र्रे में मालिक की मौजूदगी मानी जाती है, आयद होते हैं यानी न उसमें सर्वशक्तिमत्ता है, न उससे कोई सुबूत सर्वज्ञता का मिलता है, न उसमें कोई आनन्द है और न उसके जिस्म से कोई प्रकाश हो रहा है, न ही उसको संस्कृत विद्या से वाक़फ़ियत है; न हीं उसकी बनावट ऋषि मुनियों के लम्बे चौड़े और चमकदार चेहरे से मुशाबहत रखती है। इससे मालूम हुआ कि किसी पदार्थ में परमात्मा यानी मालिक के भरपूर मौजूद होने पर

भी ज़रूरी नहीं है कि हम लोगों के समझे हुए सत्, चित्, आनन्द वग़ैरह गुण उस पदार्थ से ज़ाहिर हों। इसी तरह साध सन्त के तन व मन से भारी वज़न उठवाने या किसी नये यन्त्र या कल के ईजाद कराने की उम्मीद रखना या तन में यहाँ के क़ायदे क़ानून के बमूजिब जो रद्द व बदल होता है उससे बरियत चाहना नादानी की बात है। यही धोका खाकर बहुत से राजा बादशाह व विद्वान् राज, धन, फ़ौज, बल, बुद्धि वग़ैरह के प्राप्त होने पर दावा खुदाई का करने लगे और कुछ दिनों पीछे या अन्तसमय पर यह सामान बेमसरफ़ देखकर और अपनी बदहैसियती महसूस करके शरमिन्दा हुए।

अब देखना चाहिए कि साध सन्त के हृदय के घाट पर ये गुण किस तौर पर अपना इज़हार करते हैं — सत्ता यानी समर्थता का इज़हार उनके अपने मन व इन्द्रियों व तन पर पूरा क़ाबू रखने से होता है यानी जैसे हम लोग कोई मन इन्द्रिय का भोग देखकर फ़ौरन् बेबस होकर उसकी जानिब मुख़ातिब हो जाते हैं और दिन रात संसारी पदार्थों व सामानों के गुनावन व उधेड़ बुन में लगे रहते हैं और वासना प्रकट होने पर हमारा तन बेक़ाबू हो जाता है और वासना के पदार्थ की तरफ़ बेतहाशा झुक जाता है, साध सन्त के मन व तन की ऐसी हालत नहीं होती बल्कि उनको पूरा क़ाबू अपने मन व तन पर

हर वक़्त रहता है यानी जब तक चाहा तन व मन को इस्तेमाल किया और जब मतलब निकल आया दोनों बेकार हैं – इसी तरह पर हृदय के घाट पर ज्ञान के यह मानी नहीं कि साध सन्त को हर वक़्त यह नज़राई पड़ता रहे कि कुल संसार के जीव क्या क्या काम कर रहे हैं और हर एक पहाड़ की तह में क्या क्या सामान छिपा है बल्कि वह ज्ञान अपना इज़हार मालिक की मौजूदगी के साक्षात् इल्म और हक़्क़ुलयक़ीन की शक्ल में करता है और बजाय विद्या व बुद्धि पर तकिया होने के अनुभव द्वारा उनकी कार्रवाई चलती है। ऐसे ही आनन्द भी तवज्जह की धार के अपने केन्द्र यानी मरकज़ में सिमटे रहने के असर की सूरत में प्रकट होता है। इस लिए जिज्ञासू को चाहिए कि अपने ख़्यालात को हस्ब मज़कूरा बाला दुरुस्त करके साध सन्त की तलाश करे और लोगों के बहकाये में न लगे। अब आगे साध सन्त यानी सच्चे गुरू की तलाश के सिलसिले में जो दूसरा फ़ासिद ख़्याल फैल रहा है उसका बयान किया जाता है।

ग़लत समझौती पाँचवीं व जवाब।

३४–बाज़ लोग ऐसा कहते हैं कि गुरुभक्ति करनी तो ज़रूर चाहिए मगर ख़ास गुरू तलाश करने की ज़रूरत नहीं है–गुरू गुरू सब यकसाँ हैं–किसी भी ब्राह्मण या विरक्त से दीक्षा लेलेना काफ़ी है–या यह कि बुज़ुर्गों

के वक़्त से जो वंशावलीय गुरू चले आते हैं उन्हीं से गुरुमन्त्र लेना मुनासिब है। यह ख़्याल भी क़तई ग़लत है क्योंकि गुरू का धारण करना महज़ किसी बाहरी रस्म अदा करने के लिए नहीं किया जाता। अगर कोई शख़्स मामूली इन्सान की तरह तन व मन में बँधा है और उसकी सुरत की शक्ति मिस्ल औरों के गुप्त है तो वह ख़ुद अन्धा है और ज़ाहिर है कि अन्धा अन्धे को क्या रास्ता दिखलावेगा और ऐसे असमर्थ जीव के सङ्ग व सोहबत से क्या मदद परमार्थ की कमाई में मिल सकेगी। अगर कोई ऐसे शख़्स से गहरी व सच्ची प्रीति करेगा तो नतीजा यह होगा कि कुछ अर्से में उसकी बासनाएँ और रग़बतें और नफ़रतें प्रीति करने वाले के दिल में घर कर लेंगी और परमार्थ का मिलना तो दूर रहा उलटा उसके संस्कारों का असर और मन का ज़हर प्रीति करने वाले के ऊपर ग़ालिब हो जावेगा।

वंशावलीय गुरू की निस्बत भी ऊपर के एतराज़ात किये जा सकते हैं। वंशावलीय गुरुओं में आपस में थोड़ासा फ़र्क़ होता है — एक तो वे लोग वंशावलीय गुरू कहलाते हैं जो किसी साध सन्त महात्मा के बराहे रास्त नस्ल में से हैं, दूसरे वे लोग जो कि नस्ल में से नहीं हैं मगर किसी वजह से गद्दी व जायदाद सँभाल बैठे हैं और महन्त व सज्जादानशीन कहलाते हैं। इन दोनों में फ़र्क़

यह रहता है कि एक का तो सिलसिला खून का सच्चे गुरू के साथ चला आता है और दूसरे का इस क़िस्म का कोई रिश्ता नहीं होता। बाज़ खानदानों में अव्वल क़िस्म के गुरुओं की पूजा या परस्तिश जारी है और बाज़ खान्दानों में दूसरे क़िस्म के गुरुओं की मानता है। यह दुरुस्त है कि अव्वल क़िस्म के गुरुओं में सच्चे गुरू के खून का अंश मौजूद होने से उनकी ताज़ीम व अदब करना लोगों पर फ़र्ज़ है मगर चूँकि उनको कोई परमार्थी गति हासिल नहीं है इस लिए परमार्थ की आशा यानी सुरत के जगने और निर्बन्ध होने की उम्मीद उनसे बाँधना लाहासिल है अलबत्ता अगर कोई ऐसे साहब हों कि जो किसी सच्चे गुरू के खान्दान में पैदा भी हुए हैं और जिन्हों ने परमार्थी गति भी हासिल की है तो बेशक उनके चरणों में आशा बाँधना जायज़ व दुरुस्त है। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि यह दर्जा उनको खान्दान में जन्म लेने की वजह से प्राप्त नहीं हुआ बल्कि किसी सच्चे गुरू की सेवा व भक्ति करने और उनकी हिदायत के बमूजिब अभ्यास की कमाई करने से हासिल हुआ। चूँकि आज कल साध सन्त व फ़ुक़रा की औलाद की पूजा बड़े ज़ोर व शोर के साथ जारी है और उनके आसरे रहकर लोगों ने सच्चे साध सन्त की तलाश छोड़ दी है इस लिए इस मज़मून की कुछ और तहक़ीक़ात करना ज़रूरी मालूम होता है।

३५—लोगों का ख़्याल है कि माता पिता का सन्तान पर बहुत कुछ असर पड़ता है-चुनांचे देखने में आता है कि तन्दुरुस्त व मज़बूत आदमियों की औलाद पुष्ट होती है, लिखे पढ़े आदमियों के बच्चे अक्सर होशियार होते हैं और बाज़ औक़ात बच्चे का मुँह तक माँ बाप से मिलता जुलता है मगर इसके बरख़िलाफ़ भी देखने में आता है कि बच्चों का बदन व चेहरा माँ बाप से मुशाबहत नहीं रखता और आलिम फ़ाज़िल की औलाद बिलकुल मूढ़ व आवारा, और बिलकुल अनपढ़ की औलाद आलिम फ़ाज़िल है। इस लिए अहले इल्म की राय है कि आम तौर पर बच्चे के चेहरे की बनावट ज़रूर माँ बाप के चेहरे की बनावट पर होती है और जिस्म की हड्डी पसली की बनावट भी माँ बाप की हड्डी पसली की बनावट पर होती है लेकिन मुख़्तलिफ़ बीमारियों व रुकावटों (मसलन् माता व बच्चे को पूरी ग़िज़ा का न मिलना-ख़राब हवा में रहना-ग़म व फ़िक्र का सिर पर चढ़े रहना वग़ैरह वग़ैरह) के कारण बच्चे का जिस्म बिगड़ तिगड़ जाता है और उनकी यह भी राय है कि यह ज़रूरी नहीं है कि बाप की दिली व दिमाग़ी ताक़तें भी बेटे के हिस्से में आवें। इतना होता है कि वालिदैन से रिश्ते की वजह से औलाद को दिल व दिमाग़ वग़ैरह ऐसे मिलें जिनके द्वारा ख़ास क़िस्म के

अङ्ग मन के बहुत जल्द व सहूलियत के साथ प्रकट हो सकें। यह भी है कि वालिदैन के लायक़ होने की वजह से बच्चे को बहुत कुछ मौक़ा बचपन में होशियार बन जाने का होता है। यह भी हो सकता है कि अगर वालिदैन लायक़ न होते तो मौजूदा हालत की निस्बत किसी बच्चे की दिली व दिमाग़ी ताक़तें बहुत घटिया या खराब रहतीं लेकिन यह लाज़िमी नहीं है कि बच्चा ज़रूर ही माँ बाप की तरह से लायक़ फ़ायक़ निकले। कहने की मन्शा यह है कि यह कोई ज़रूरी क़ायदा नहीं है कि बच्चा माँ बाप की आदत खसलत व लियाक़त लेकर पैदा हो। कभी ऐसा हो भी सकता है और कभी नहीं भी हो सकता है। चुनांचे तहक़ीक़ हुआ है कि जब कभी किसी खान्दान में कोई गैरमामूली क़ाबलियत वाला आदमी पैदा हुआ, उसके आगे पीछे पाँच सात पुश्तों में निहायत मामूली क़ाबलियत के लोग हुए बल्कि बाज़ लोग कहते हैं कि चूँकि गैरमामूली क़ाबलियत वाला बच्चा खान्दान की दिमाग़ी व दिली ताक़तों का भारी जुज़ अपने में जज़्ब कर लेता है इस लिए उसके आयन्दा भाई व बच्चे कमज़ोर दिल व दिमाग़ वाले होते हैं। अगर यह बात दुरुस्त है यानी अगर यह ज़रूरी नहीं है कि औलाद माँ बाप की दिल व दिमाग़ की ताक़तों को जन्म से हासिल करे तो यह भी ज़रूरी नहीं है कि बाप

की रूहानी ताक़त बेटे को जन्म की वजह से मिले और तवारीख व मौजूदा जमाने की हालत भी बतलाती है कि वाक़ेआत हमेशा इन नतीजों के खिलाफ़ नहीं होते। ऐसी हालत में ग़ौर करना चाहिए कि कहाँ गुंजायश है कि किसी बुज़ुर्ग, साध सन्त, महात्मा की औलाद को महज़ खून के रिश्ते की वजह से गुरू मानकर उनसे रूहानी मदद की आशा क़ायम कर ली जावे। ऐसी आशा क़ायम करने से पहले मुनासिब है कि उनकी जहाँ तक मुमकिन हो परख पहचान कर ली जावे और अगर परख पहचान में वे पूरे न उतरें तो किसी दूसरे दरवाजे पर आवाज़ दी जावे।

३६—अलावा इसके देखना चाहिए कि हर शख़्स इस जिन्दगी में बवजह वासना के एक जगह से दूसरी जगह जाता है और खास लोगों व पदार्थों से मेल करता है और जिस वक़्त जो वासना प्रबल होती है उसका रूप बनकर अपने तन, मन, धन को उस तरफ़ पेल देता है। इस कैफ़ियत से यह समझना ग़लत न होगा कि देह त्यागने पर भी जीव प्रबल वासना ही के पूरा करने के लिए मुनासिब शरीर इख़्तियार करता है और शरीर इख़्तियार करने के लिए किसी माता पिता की शरण लेता है।

ख़्याल करो कि कहीं पर कोई शरीफ़ खान्दान है-अगर कोई साध सन्त महात्मा उस खान्दान में जन्म लेने की

मौज फ़रमाते हैं तो ज़ाहिर है कि उस ख़ान्दान को वे ख़ास कर इस लिए पसन्द फ़रमाते हैं कि उसमें जन्म व परवरिश पाकर जीवों के उद्धार की कार्रवाई वे मौज के मुताबिक़ सहूलियत के साथ कर सकेंगे और इस घाट की सब ज़रूरी सामग्री, जो मौज की कार्रवाई करने के लिए दरकार होगी, सहज में प्राप्त हो जावेगी।

फ़र्ज़ करो कि ऐसे ख़ान्दान में कोई महात्मा प्रकट हुए और कुछ मुद्दत बाद आप के घर पुत्र पैदा हुआ। आप के घर पुत्र चार तरह की बासना लेकर आ सकता है--अव्वल यह कि सहज में आला परमार्थ की रीति समझ कर कमाई करे और अपना उद्धार करावे— दूसरे यह कि परमार्थ की रीति समझ कर व कमाई करके आप के बाद सिलसिला परमार्थी बख़्शिश का जारी रक्खे--तीसरे यह कि उन महात्मा की मौजूदगी में या गुप्त होने के बाद उनकी सङ्गत में फ़िसाद मचावे— और चौथे यह कि और कोई संसारी बासना, जो इस ख़ान्दान के संयोग से हासिल हो सकती हो, पूरी करे। ज़ाहिर है कि पहली बासना के लिहाज़ से पुत्र प्रेमी परमार्थी सुरत तसव्वुर होगा और दूसरी बासना की वजह से साध सन्त और तीसरी बासना की रू से परमार्थ का दुश्मन और चौथी बासना के ख़्याल से मामूली संसारी जीव।

अब ग़ौर करना चाहिए कि ऊपर के लेख के बमूजिब उस खान्दान में जो कुछ भी खसूसियत है उसमें से वह पुत्र खास कर अपनी वासना ही के मुतअल्लिक़ जुज़ हासिल करेगा यानी अगर वह प्रेमी परमार्थी है और पहली क़िस्म की वासना लेकर आया है तो उसको दिल व दिमाग़ व जिस्म जन्म से परमार्थ कमाने के लिए मौज़ूँ मिलेंगे और पिता की तवज्जह से पुत्र के दिल व दिमाग़ थोड़े ही अरसे में और भी ज़्यादा परमार्थ के लिए मौज़ूँ बन जावेंगे। ऐसा पुत्र बचपन ही में शौक़ परमार्थ की कार्रवाई करने और परमार्थ के सिलसिले में हाज़िरी देने का ज़ाहिर करने लगेगा और आम लोगों की निस्बत बहुत ज़्यादा क़दर परमार्थी संयोग की करेगा और अगर पुत्र परमार्थ कराने के लिए यानी दूसरी वासना लेकर आया है तो इस हालत में छोटी उम्र ही से परमार्थी वासना उसकी झलकने लगेगी और ज्यों ज्यों उम्र बढ़ती जावेगी उसमें अभ्यास सेवा व सतसंग के शौक़ और दीनता और प्रेम प्रीति की मौजूदगी साफ़ तौर पर ज़ाहिर होने लगेगी। तीसरी या चौथी वासना लेकर आने वाला जीव खान्दान से क्या कुछ हासिल करेगा और बचपन में कैसा हाल उसका रहेगा, बयान का मोहताज नहीं है।

३७–फ़र्ज़ करो कि पिता ने चोला छोड़ने की मौज फ़रमाई। अब देखो कि पिता के गुप्त होने पर पुत्र के कौन अङ्ग ज़ाहिर होते हैं। अव्वल, अगर पुत्र वाक़ई प्रेमी परमार्थी है और अपना उद्धार कराने की सच्ची फ़िक्र रखता है तो पिता के गुप्त होने पर वह निहायत दुखी और बिकल होगा और जब तलक उसको कोई ऐसा पुरुष न मिल जावेगा, जो उसके गुप्त हुए पिता की तरह उससे परमार्थ की कमाई करावे, उसको आराम न आवेगा। चूँकि अपने पिता के चरणों में हाज़िर रहकर उसने तजरुबा हासिल किया है कि संसार और उसके तमाम रस व आनन्द गहरे दुख के सामान हैं और सब जीव बेबस इधर उधर मन की धारों में बह रहे हैं और सिर्फ़ पिता के सङ्ग व सोहबत और दया-दृष्टि के प्राप्त होने पर असल शान्ति व तक़वियत मालूम होती है इस लिए उसको कोई जीव या मन का अङ्ग यकायक बहका नहीं सकता और न ही कोई भोग बिलास संसार का शान्ति व तसल्ली दे सकता है।

दूसरे, अगर पुत्र ख़ुद वाक़ई साध सन्त है तो पिता के गुप्त होने पर वह पिता की मौज की कार्रवाई जारी रखने का इन्तिज़ाम करेगा और सब प्रेमी परमार्थियों को, जो कि उसके पिता के गुप्त होने की वजह से ऊपर लिखे हुए बयान के बमूजिब व्याकुल हो रहे हैं, अपने दर्शन व

बचनों से और नीज़ अन्तरी बाहरी परचों व इशारों से धीरज बँधवावेगा और उन प्रेमी परमार्थियों को इधर उधर भटकने की तकलीफ़ से बचावेगा, गोया कि पिता की तरह अपने यहाँ से परमार्थ की दौलत की बख्शिश के जारी रहने का निहायत ख़ूबसूरती और कामयाबी के साथ इन्तिज़ाम करेगा।

इसी तरह पर अगर पुत्र तीसरी या चौथी वासना लेकर आया है तो पिता के गुप्त होने पर डर उठ जाने से या तो निहायत बेरहमी के साथ परमार्थ के उसूलों व सङ्गत को मटियामेल करने की कोशिश करेगा या अपनी संसारी वासनाओं में बेधड़क बरताव करने लगेगा। यह मुमकिन है कि इन वासनाओं वाला पुत्र अवायल उम्र में थोड़ा बहुत शौक़ परमार्थ का भी ज़ाहिर करे लेकिन यह पिता के बाहरी असर की वजह से होगा, जैसा कि दफ़ा ३५ में बयान किया गया, यानी लायक़ वालिदैन की वजह से औलाद पर थोड़ा बहुत नेक असर बावजूद औलाद के जन्म से नालायक़ होने के ज़रूर पड़ता है।

३८—दफ़आत ३६ व ३७ के मज़मून पर ग़ौर करने से नतीजा निकलता है कि अगर यह मान भी लिया जावे कि किसी ख़ान्दान की उत्तमता का अंश जन्म से बच्चे को ज़रूर ही मिल सकता है तो भी सच्चा परमार्थ

कमाने या सिखलाने की बासना के बजाय ऊपर लिखी हुई तीसरी व चौथी तरह की बासना लेकर आने वाला जीव साध सन्त के खान्दान से बवजह बासना के फेर के परमार्थी उत्तमता हासिल न कर सकेगा इस लिए जिज्ञासू को किसी साध सन्त या गुरू की औलाद के चरणों में परमार्थी आशा क़ायम करने से पहले यह देखना चाहिए कि आया यह साहब अपने पिता की मौजूदगी में प्रेमी परमार्थी की तरह बरते या नहीं—अगर न बरते हों तो उनकी जानिब परमार्थ के लिए तवज्जह करना बेमतलब है और अगर बरते हों तो यह देखना चाहिए कि पिता के गुप्त होने पर उनकी क्या दशा रही—अगर पिता के गुप्त होने पर भी वह प्रेमी परमार्थी की तरह बरते हों तो उस हालत में भी उनसे अपना कार्य पूरा कराने की कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए क्योंकि वह ख़ुद पूरे नहीं हैं और उनकी गुरु-गति नहीं है अलबत्ता उनसे मेल जोल रखने में किसी क़दर फ़ायदा होगा क्योंकि उनकी रहनी गहनी सच्चे प्रेमी परमार्थी की सी है—और अगर वह पिता की तरह, जैसा कि ऊपर ज़िक्र किया गया, बरते हों यानी उन्हों ने निर्मल परमार्थ की बख़्शिश पिता की तरह बदस्तूर जारी रक्खी हो तो इस हालत में उनके चरणों में लग जाना चाहिए—और अगर पिता के गुप्त होने पर परमार्थ

के उसूलों के खिलाफ़ वरताव किया और परमार्थ को गँदला करने व सङ्गत को तितर वितर करने के सिवाय कुछ काम नहीं किया तो ऐसी हालत में उनसे बहुत कुछ परहेज़ करना चाहिए—और चौथी वासना की हालत का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है यानी जो शख़्स मन व इन्द्रियों के अङ्गों में वेतकल्लुफ़ वरत रहा है और परमार्थ की तरफ़ कोई तवज्जह नहीं देता वह महज़ संसारी जीव है, उससे किसी का परमार्थ क्या वनेगा। अव आगे तीसरे फ़ासिद ख़्याल का वयान करते हैं।

ग़लत समझौती छठी व जवाव।

३६—वाज़ लोग कहते हैं कि नया गुरू तलाश करने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि जो सन्त महात्मा पिछले ज़माने में होगये हैं वे सूक्ष्म रूप से अपने भक्तों की मुनासिव सहायता वरावर फ़रमाते हैं इस लिए श्रद्धा के साथ उनकी वानी का पाठ करने और उनकी शिक्षा पर चलते रहने ही से सव काम वन जावेगा। मालूम होवे कि यह ख़्याल भी पिछले ख़्यालों की तरह विलकुल ग़लत है। इतना तो हो सकता है कि पिछले महापुरुषों के जीवन का आदर्श निगाह में रखने और उनकी वानी का श्रद्धा के साथ समझ समझ कर पाठ करने से मन के वहुत से विकारी अङ्गों से किसी क़दर वचाव रहे और वाहरी परमार्थी रस्मियात, जो उन महापुरुषों

की जमाअतों में जारी हैं, दुरुस्ती से बन पड़ें लेकिन अन्तरी अभ्यास का दुरुस्ती के साथ बन पड़ना और सुरत का जगकर तन व मन की क़ैदों से पूरी रिहाई हासिल करना हरगिज़ मुमकिन नहीं है। ग़ौर करना चाहिए कि अगर सन्त महात्मा अब यानी संसार से लौट जाने पर अपने सूक्ष्म रूप से जीवों की मदद फ़रमा सकते हैं तो वे संसार में आने से पेश्तर भी सूक्ष्म रूप से सहायता कर सकते थे मगर क्या उन्हों ने ऐसा किया? हर कोई जानता है कि उनके संसार में प्रकट होने से पहले किसी को उनकी निस्बत मुतलक़ खबर न थी और न ही किसी ने उनसे फ़ैज़ हासिल किया।

"बानी गुरू गुरू है बानी विच बानी अम्मृत सारे।
सतगुरु कहै सेवकजन माने प्रत्यक्ष गुरू निस्तारे।"

फ़िहरिस्त पुस्तकों की

जो स्टोरकीपर, राधास्वामी सेन्ट्रल सतसंग, दयालबाग़, आगरा, से मिल सकती हैं।

—o—

नाम पुस्तक		क़ीमत
छन्दबन्द		
१—राधास्वामी बानी संग्रह भाग १	हिन्दी	२)
२—प्रेमबिलास भाग १	"	॥)
३—प्रेमबिलास भाग २	"	॥)
४—प्रेमबिलास भाग ३	"	॥)
वार्तिक		
५—प्रेम समाचार	हिन्दी	॥)
६—अमृत-बचन	"	३)
७—राधास्वामी मत दर्शन	"	॥=)
८—राधास्वामी मत दर्शन	उर्दू	॥=)
९—राधास्वामी मत दर्शन	बँगला	॥)
१०—राधास्वामी मत दर्शन	तिलेगू	॥)
११—जिज्ञासा नंबर १	हिन्दी	॥)
१२—जतन-प्रकाश		॥)
१३—प्रेमसन्देश मासिक पत्र नं० १		।=)
१४—प्रेमसन्देश मासिक पत्र नं० २		।=)
१५—प्रेमसन्देश मासिक पत्र नं० ३		।=)